- प्रस्तावना
- संक्षेपिका
- प्रशिक्षण का अध्यापक की सोच पर प्रभाव
- निष्कर्ष
- सुझाव
- भावी शोध हेतु सुझाव

अध्याय–पंचम

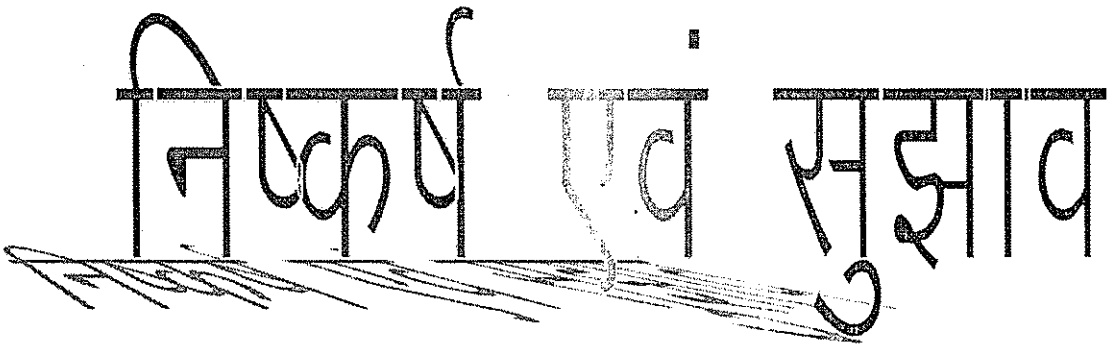

(5.1) (प्रस्तावना) :–

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद् शिक्षा संम्बंन्धी सुविधाओं के लगातार सर्वेक्षणों से पता चलता है, कि प्रारंभिक चरण में शिक्षा सुविधाओं और नामांकन का काफी विस्तार हुआ हैं। शिक्षा हमें इस योग्य बनाती है कि परिस्थितियों के अनुरूप उचित निर्णय लेकर सही मार्ग को चयन करने और जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न अवसरों पर सही विकल्प का चुनाव कर सके।

भारत में शिक्षा का इतिहास उतना ही पुराना है, जितना कि स्वयं मनुष्य का इतिहास , लेकिन अध्यापक शिक्षा के इतिहास का उद्भव हाल ही में हुआ है शिक्षा जीवन की अनिवार्यता है। यह जीवन को सरस एवं सजीव बनाती है तथा शारीरिक ,मानसिक व अध्यात्मिक विकास को ऊर्जा प्रदान करती हैं विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान करने के लिए योग्य शिक्षकों का होना आवश्यक है, क्योकि संम्पूर्ण शिक्षा प्रक्रिया की श्रृंखला में अध्यापक की भूमिका अत्यंन्त महत्वपूर्ण होती है ।

(5.2) संक्षेपिका :–

संम्पूर्ण लधुशोध को पाँच अध्यायों में विभक्त किया गया है । प्रथम अध्याय में शोध परिचय , द्वितीय ,अध्याय में शोध संवंधित अध्ययन,तृतीय अध्याय में समस्या प्रविधि एवं प्रक्रिया , चतुर्थ अध्याय में प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या तथा पंचम अध्याय में शोध सार, निष्कर्ष एवं सुक्षाव तथा अंत में संन्दर्भ ग्रंथ एवं परिशिष्ट में उपयोग किये गये उपकरणेां के लिया गया है।

(5.3) सेवाकालीन शिक्षक –प्रशिक्षण का अध्यापक की सोच पर प्रभाव :–

विभिन्न संस्थाओं में जाकर अवलोकन करने पर ज्ञात हुआ कि शालाओं में शिक्षक विषय वार पदस्थ नहीं हैं। यहाँ तक कि उनके उस विषय की मूलभूत जानकारी भी नहीं पाई गई। जब शिक्षक को उक्त विषय का प्रारंभिक ज्ञान स्वयं को ही नहीं है, तो वह बच्चेां को क्या पढ़ाने हेतु दे दिया जाता है, तो हम कल्पना कर सकते हैं कि वह बच्चों के साथ अध्ययन में कितना न्याय कर सकेगा अर्थात मात्र खाना पूर्ति ही होगी ।

अतः यह देखा गया कि शिक्षकों के अनुसार विषयों का अध्ययन कराने का कार्य नहीं मिलने से संम्वंधित शिक्षक कुन्जी (दीपिका) पढ़कर या जैसे जोड़ –तोड़

कर इधर –उधर का अध्ययन कराता है, जिससे बच्चों को जिस मात्रा में अधिगम होना चाहिए नहीं होता थां, इन्ही सब विन्दुओं को घ्यान में रखते हुये प्रशासन द्वारा निर्णय लिया गया कि क्यों न सभी शिक्षकों को सभी विषयों का प्रशिक्षण वर्ष में एक बार **सेवाकालीन प्रशिक्षण** के नाम से दिये जाकर शिक्षकों की विषय से संम्बंधित कमजोरियों को दूर करने हेतु विषय के ज्ञाता शिक्षकों के द्वारा दिया जाय, जिससे शिक्षकों को तो विषयो का ज्ञान होगा ही साथ ही **शिक्षक की सोच** पर भी प्रभाव पढ़ेगा।

इसी बात को दृष्टिगत रखते हुये विगत वर्षों से राज्य शिक्षा केन्द्र द्वारा सभी जिला शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में सेवाकालीन प्रशिक्षण ग्रीष्मकालीन अवकाश में आयोजित किया गया, जिसके परिणाम गत वर्ष से ही परिलक्षित हुये अर्थात जो बच्चे ड़ी ग्रेड़ के थे वे सी या बी ग्रेड़ में आने लगे तथा जो सी ग्रेड़ के बच्चे थे वे ए ग्रेड़ में आने लगे।

अतः हम कह सकते हैं कि सेवाकलीन प्रशिक्षण से शिक्षक अपनी **सोच द्वारा पूर्ण** ज्ञान एवं आत्मविश्वास के साथ पढ़ाता है और बच्चों पर भी इसका दूरगामी सकारात्मक प्रभाव पढ़ता है।

(5.4) निष्कर्ष :–

परिकल्पना (1) :– शहरी तथा ग्रामीण विद्यालय के अध्यापकों का सेवाकालीन शिक्षक –प्रशिक्षण के प्रभावशीलता पर, अध्यापक की सोच में सार्थक अंन्तर नहीं है?

डाटा विश्लेषण करने के बाद,यह स्पष्ट हो जाता है कि शहरी तथा ग्रामीण विद्यालय के अध्यापकों का प्रशिक्षण के प्रभावशीलता पर ,अध्यापक की सोच में सार्थक अंन्तर नहीं हैं। प्रशिक्षण प्रभावशीलता का वैकल्पिक शिक्षा घटक पर क्षेत्र का प्रभाव दिखाई दिया ,शेष धटकों पर क्षेत्र का प्रभाव नहीं पाया गया । इस प्रकार परिकल्पना स्वीकृत हो जाती है।

परिकल्पना (2) :– पुरूष तथा महिला अध्यापकों का सेवाकालीन शिक्षक –प्रशिक्षण के प्रभावशीलता पर, अध्यापक की सोच में सार्थक अंन्तर नहीं है?

डाटा विश्लेषण करने के बाद, यह स्पष्ट हो जाता है कि पुरूष तथा महिला अध्यापको कां प्रशिक्षण के प्रभावशीलता पर ,अध्यापक की सोच में सार्थक अंन्तर नहीं हैं। लिंग के आधार पर पुरूष अध्यापकों की अपेक्षा

महिला अध्यापकों में अधिक प्रभाव पाया गया। इस प्रकार परिकल्पना स्वीकृत हो जाती है।

परिकल्पना (3) :– कम अनुभव तथा अधिक अनुभव वाले अध्यापकों का सेवाकालीन शिक्षक –प्रशिक्षण के प्रभावशीलता पर, अध्यापक की सोच में सार्थक अंन्तर नहीं है।

डाटा विश्लेषण करने के बाद,यह स्पष्ट हो जाता है कि कम अनुभव तथा अधिक अनुभव वाले अध्यापकों का प्रशिक्षण के प्रभावशीलता पर ,अध्यापक की सोच में सार्थक अंन्तर हैं। अनुभव के आधार पर प्रशिक्षण प्रभावशीलता पर प्रभाव पाया गया,अर्थात जो अध्यापक अधिक अनुभव वाले थे उन्हें कार्य और प्रशिक्षण के बारे में अधिक अनुभव था, किन्तु जो अध्यापक कम अनुभव वाले थे, उन्हें कार्य और प्रशिक्षण के बारे में कम अनुभव था। प्रशिक्षण प्रभावशीलता के वैकल्पिक बाल शिक्षा धटक में प्रभाव दिखाई दिया, शेष प्रशिक्षण के धटक में अनुभव का कोई प्रभाव नहीं दिखाई दिया। इस प्रकार परिकल्पना अस्वीकृत हो जाती है।

परिकल्पना (4) :– कम योग्यता तथा अधिक योग्यता वाले अध्यापकों का सेवाकालीन शिक्षक –प्रशिक्षण के प्रभावशीलता पर, अध्यापक की सोच में सार्थक अंन्तर नहीं है?

डाटा विश्लेषण करने के बाद, यह स्पष्ट हो जाता है कि कम योग्यता तथा अधिक योग्यता वाले अध्यापकों का प्रशिक्षण के प्रभावशीलता पर ,अध्यापक की सोच में सार्थक अंन्तर नहीं हैं। योग्यता का गुणवत्ता व्यवस्थापन घटक पर कुछ प्रभाव पाया गया तथा शेष घटकों पर कोई प्रभाव नहीं पाया गया । जो अध्यापक अधिक योग्य थे, वे प्रशिक्षण का उपयोग अत्यधिक गहराई से अध्यापन कार्य में कर रहे थे ,तथा पढ़ाई के प्रति भाषा शैली में अत्यधिक रूचि रखते थे ,किन्तु जो अध्यापक कम योग्य थे, वे प्रशिक्षण का उपयोग अत्यधिक गहराई से अध्यापन कार्य में कम कर रहे थे ,व पढ़ाई के प्रति भाषा शैली में कम रूचि रखते थे ।
इस प्रकार परिकल्पना स्वीकृत हो जाती है।

(5.5) शैक्षिक सुझाव :–

- प्राथमिक शाला शिक्षक हेतु निर्धारित योग्यता होनी चाहिए। अप्रशिक्षित का चयन न किया जावें । चयन उपरान्त शिक्षक को विषय–शिक्षण ,सहायक शिक्षण सामग्री निर्माण, गतिविधि आधारित शिक्षण आदि का प्रशिक्षण देने के उपरांत ही अध्यापन कार्य करवाया जाय।
- शिक्षकों के लिए आवश्यक है कि समय –समय पर प्रशिक्षक सामग्री को पलटते एवं पढ़ते रहना चाहिए व कक्षा में योजना बनाने तथा लागू करने में इसका उपयोग करना चाहिए।
- शिक्षकों के लिए संस्थान में विविध कार्यक्रमों का आयोजन किया जाय ।जैसे ,वाद–विवाद प्रतियोगिता ,स्नेह सम्मेलन ,निषेध ,लेख स्पर्धा आदि।
- सेवाकालीन शिक्षक –प्रशिक्षण देने के बाद जिला एवं ड़ाईट द्वारा योग्य मानीटिरिंग की व्यवस्था करनी चाहिए।
- बहुकक्षा शिक्षण का कार्य करने के लिए शिक्षकों को प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए।
- शिक्षकों को प्रशिक्षण के माध्यम से नवाचारिता तकनीकी प्रयोग करने की जानकारी दी जानी चाहिए ।
- टी.एल.एम. निर्माण के लिए बी..आर.सी. एवं सी.आर.सी. सामग्री का प्रदर्शन करना चाहिए।
- शिक्षक को कक्षा में अध्यापित विषय से संम्वंधित चर्टस /पोस्टर का प्रयोग शिक्षण कार्य के समय करना चाहिए।
- शिक्षकों को चाहिए कि विषय को पढ़ाते समय पाठ योजना बना लेनी चाहिए।
- शिक्षक प्रशिक्षण निरंतर होने चाहिए।

(5.6) भावी शोध हेतु सुझाव :–

- म.प्र. के ग्रामीण शालाओं में शिक्षकों के वर्तमान –शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम का मूल्यांकन करना चाहिए।
- ड़ी.एड़ तथा बी.एड़. शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के प्रशिक्षण कार्य का उपयोगिता का तुलनात्मक अध्ययन करना चाहिए।
- विद्यार्थी की उपलब्धि और सेवाकालीन परिचयात्मक शिक्षक –प्रशिक्षण का समालोचनात्मक अध्ययन् करना चाहिए।
- सेवाकालीन शिक्षक –प्रशिक्षण में पुरूष और महिला अध्यापकों की कार्य क्षमता का मूल्यांकन करना चाहिए।